(क) अंतरजामी कुंवर कन्हाई ।

गुरु गृह पढ़त हुते जहँ विद्या, तहँ ब्रज-बासिन की सुधि आई ।

गुरु सौं कह्यौ जोरि कर दोऊ, दक्षिणा कहौ सो देऊँ मँगाई ।

गुरु-पत्नी कह्यौ पुत्र हमारे, मृतक भये सो देहु जिवाई ।

आनि दिए गुरु-सुत जमपुर तैं, तब गुरुदेव असीस सुनाई ।

सूरदास प्रभु आइ मधुपूरी, ऊधौ कौं ब्रज दियौ पठाई ।।

(ख) आजु कोउ नीकी बात सुनावै ।

कै मधुबन तैं नन्द लाड़िलौ, कैऽब दूत कोउ आवै ।

भौंर एक चहुँदिसि तैं उड़ि-उड़ि, कानन, लगि-लगि गावै ।

उत्तम भाषा ऊँचे चढ़ि-चढ़ि, अंग-अंग सगुनावै ।

No. of Printed Pages : 06 Roll No. .....

51695

M.A. EXAMINATION, 2026

(Fourth Semester)

(Re-appear Only)

HINDI

सूरदास के काव्य का विशेष अध्ययन

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks :* 80

Before answering the question-paper, candidates must ensure that they have been supplied with correct and complete question-paper. No complaint, in this regard will be entertained after the examination.

नोट : सभी भागों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए ।

भाग I

नोट : प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **3×16=48**

इकाई I

1. 'सूरसागर' में चित्रित विनय के भाव को स्पष्ट कीजिए ।

2. सूरदास के प्रभु भक्तवत्सल हैं, उदाहरण देकर समझाइए ।

3. 'मन-प्रबोध' में सूरदास मोह-माया से दूर रहने का सन्देश देते हैं, स्पष्ट कीजिए ।

इकाई II

4. सूरदास ने श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का सुन्दर चित्रण किया है, वर्णन कीजिए ।

5. श्रीकृष्ण की बाल-लीलाएँ मन को मोहित करने वाली हैं, उदाहरण सहित वर्णन कीजिए ।

6. 'वृन्दावन लीला' के आधार पर श्रीकृष्ण जी के कल्याणकारी स्वरूप को चित्रित कीजिए ।

भाग II

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** लघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग **250** शब्दों में दीजिए । **4×4=16**

1. 'मंगलाचरण' में प्रभु कृपा का वर्णन है, स्पष्ट कीजिए ।

2. सत्संग की महिमा को प्रतिपादित कीजिए ।

3. सूरसागर में चित्रित आत्मज्ञान को स्पष्ट कीजिए ।

4. श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का चित्रण कीजिए ।

5. श्रीकृष्ण की माखन-चोरी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

6. श्रीकृष्ण की मुरली के स्वर से उत्पन्न प्रभाव को स्पष्ट कीजिए ।

भाग III

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **2×8=16**

भामिनि एक सखी सौं बिनवै, नैन नीर भरि
आवै ।
सूरदास कोऊ ब्रज ऐसौ, जो ब्रजनाथ
मिलावै ।।

(ग) ऊधौ हम आजु भईं बड़ भागी ।
जिन आँखियन तुम स्याम बिलोके, ते अँखिया
हम लागीं ।
जैसैं सुमन बास लै आवत, पवन मधुप
अनुरागी ।
अति आनंद होत है तैसैं, अंग-अंग सुख
रागी ।
ज्यौं दरपन मैं दरस देखियत, दृष्टि परम रुचि
लागी ।
तैसैं सूर मिले हरि हमकौं, बिरह-बिया
तन त्यागी ।।

(घ) ऊधौ मन नहिं हाथ हमारे ।
रथ चढ़ाइ हरि संग गए लै, मथुरा जबहिँ
सिधारे ।

नातरु कहा जोग हम छाँड़िहिँ, अति रुचि
कै तुम ल्याए ।
हम तौ झँखति स्याम की करनी, मन लै
जोग पठाए ।
अजहूँ मन अपनौ हम पावैं, तुम तैं होइ
तो होइ ।
सूर सपथ हमैं कोटि तिहारी, कही करैंगी
सोइ ।।

❖❖❖❖❖❖❖